भारतीय पुरातत्त्व परिषद्

(1860 के संस्थान पंजीकरण अधिनियम 21 (2) के तहत पंजीकृत)

लेखकों के लिए सामान्य दिशा निर्देश

'पुराप्रवाह' हिंदी भाषा में प्रकाशित होने वाली एक पूर्व समीक्षित (Peer Reviewed) वार्षिक पत्रिका है, जिसमें पुरातत्त्व और संबंधित विषयों के मौलिक शोध–पत्र तथा वर्तमान अध्ययनों पर आधारित लेखों को प्रकाशित किया जाता है। पत्रिका को सामान्यतः शोध–पत्र, लघुलेख एवं समाचार, एवं पुस्तक समीक्षा की श्रेणी में वर्गीकृत किया जाता है।

पांडुलिपि का प्रारूप

- **शीर्षक पृष्ठ**

  निम्नलिखित जानकारी एक अलग पृष्ठ पर इंगित की जानी चाहिए :
  लेख का शीर्षक, लेखकों का नाम, संबंधित संस्थान, सभी लेखकों का पता एवं ईमेल।

- **मुख्य पाठ**

  पांडुलिपि हिंदी भाषा में होनी चाहिए। लेख कृतिदेव लिपि (Kruti Dev Font) में A4 आकार के कागज पर एक तरफ टंकित किया जाना चाहिए, जिसका टाइप आकार 16 होना चाहिए। लेख विभिन्न वर्गों और अनुच्छेदों में विभाजित होना चाहिए। सभी शीर्षकों और उप शीर्षकों को मोटे अक्षरों (Bold) में चिह्नित किया जाना चाहिए। अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं के शब्दों पर विशेषक चिह्नों से परहेज किया जाना चाहिए, लेकिन इस तरह के शब्द या वाक्यांश तिरछे टंकित (italicized) होने चाहिए। जहां तक संभव हो, पाद टिप्पणी (Foot notes) और अंत टीका (End notes) न दें। यदि अत्यंत आवश्यक हो, तो इन्हें अरबी अंकों में दिया जाए तथा लेख के अंत में व्याख्यायित किया जाना चाहिए। आभार, यदि हो तो, लेख के अंत में संदर्भ एवं टिप्पणियों से पूर्व दिया जाए।

- **चित्रण– सारणी, रेखाचित्र एवं चित्र**

  प्रत्येक सारणी मुख्य पाठ में "(सारणी– 1)" इस प्रकार उद्धृत होनी चाहिए। सारणी का शीर्षक प्रत्येक सारणी के प्रारंभ में इंगित किया जाना चाहिए, जो मोटे अक्षरों (Bold) में टंकित होना चाहिए। उदाहरणार्थः

  सारणी 1: कालीबंगा के विभिन स्तरों से प्राप्त तिथियाँ

  रेखाचित्र में हस्तरचित चित्र, मानचित्र, आलेख इत्यादि सम्मिलित किए जा सकते हैं। प्रत्येक रेखाचित्र मुख्य पाठ में "(रेखाचित्र 1)" के रूप में इंगित होना चाहिए तथा रेखाचित्र

के पश्चात उसका शीर्षक उद्धृत होना चाहिए, जिसमें "रेखाचित्र 1:" मोटे अक्षरों (Bold) में लिखा जाना चाहिए, उदाहरणार्थः

रेखाचित्र 1: दुर्ग की दीवारें एवं मंदिर स्थल, बिलोट काफिर कोट

चित्र में रंगीन एवं सादे चित्र सम्मिलित किए जा सकते हैं। चित्र संख्या "(चित्र 1)" की तरह पाठ में उद्धृत होनी चाहिए। चित्र (संयुक्त फोटोग्राफिक समूह (jpg) चित्र), एक अलग फाइल में शीर्षक के साथ अंकों में सूचीबद्ध किया जाना चाहिए। शीर्षक लिखने का प्रारूप इस प्रकार हैः

चौधरी, नालंदा, चित्र 1: काले पत्थर पर बुद्ध की छवि।

- **संदर्भ**

लेख के अंत में एक संदर्भ सूची होनी चाहिए, जिसमें केवल पाठ में उद्धृत संदर्भो का विवरण दिया जाना चाहिए। सभी विवरण पूर्ण और सटीक होने चाहिए, जो लेख अथवा पाद टिप्पणियों के बाद लिखे जाने चाहिए। संदर्भ सूची में सभी संदर्भों को शिकागो नियमावली में वर्णित लेखक–दिनांक शैली के अनुरूप हिंदी वर्ण–माला के क्रमानुसार व्यवस्थित किया जाना चाहिए। संकेताक्षरों का प्रयोग नहीं होना चाहिए। यदि एक ही लेखक द्वारा एक ही वर्ष में प्रकाशित एक से अधिक लेख या पुस्तकों का संदर्भ दिया गया है, तो इन्हें छोटे अक्षरों यथा अ, ब, स इत्यादि को वर्ष के साथ जोड़कर संकेत दिया जाना चाहिए, उदाहरणार्थः लाल, बी.बी., 1951अ।

पाठ के भीतर, सभी संदर्भों में सिर्फ लेखक का उपनाम, प्रकाशन का वर्ष और पृष्ठ संख्या कोष्ठक में दिए जाने चाहिए, उदाहरणार्थः (सिंह 1986: 133–40)। उपनाम के बाद कोई अल्पविराम या अन्य संकेतांक नहीं दिया जाना चाहिए। यदि संदर्भित लेख या पुस्तक के दो लेखक हों, तो दोनों के उपनाम कोष्ठक में लिखे होने चाहिए, उदाहरणार्थः (रे एवं मुखर्जी 1992: 107–35)। दो से अधिक लेखक हो, तो इस संदर्भ को (कैनेडी एवं अन्य 1991: 140–56) के रूप में इंगित करना चाहिए। इंडियन आर्कियोलॉजिकल रिव्यू के संदर्भ में, इस संदर्भ को (आई0 ए0 आर0 1955–56: 88) की तरह पाठ में इंगित किया जाना चाहिए। यदि लेखक का नाम पहले से ही पाठ में होता है, तो लेखक के नाम के तुरंत बाद ही प्रकाशन वर्ष और पृष्ठ संख्या का कोष्ठकों में उल्लेख किया जाना चाहिए, जैसे बी0 बी0 लाल (1996: 27) की राय है कि ..... ।

संदर्भ सूची में भिन्न–भिन्न प्रकार की पुस्तकों एवं लेखों का विवरण निम्न प्रकार से दिया जाना चाहिएः–

पुस्तक के संदर्भ में :

बोस, एस0 सी0, 1979, *पश्चिम बंगाल का भूगोल*, नई दिल्लीः नेशनल बुक ट्रस्ट।

पत्रिका के संदर्भ में :

दीक्षित, कैलाश नाथ, सरस्वती घाटी में भारतीय सभ्यता का उदय, *पुराप्रवाह 1*।

संपादित पुस्तक के संदर्भ में :
साठे, वी0 जी0 एवं जी0 एल0 बादाम, 2004, फ्यूनल रिमेंस, बी0 पी0 सिंह (संपा0) *फार्मिंग कम्युनिटी इन कैमूर, द्वितीय खंड*, जयपुरः प्रकाशन योजना।

अप्रकाशित शोध ग्रंथ/शोध प्रबंध के संदर्भ में :
डांगी, विवेक, 2006, सेटलमेंट पैटर्न ऑफ महम ब्लॉक (रोहतक), अप्रकाशित एम0 फिल0 शोध प्रबंध, एमडी विश्वविद्यालय, हरियाणा।

- **प्रस्तुतीकरण**

योगदानकर्ताओं से अनुरोध है कि वे पांडुलिपि (आंकड़े, तालिकाओं और प्लेटों सहित) की एक कागजी प्रति एवं इलेक्ट्रॉनिक प्रति को अग्रलिखित पते पर भेजेंः– **संपादक, पुराप्रवाह, भारतीय पुरातत्त्व परिषद्, बी –17, कुतुब संस्थागत क्षेत्र, नई दिल्ली – 110016**। साथ ही साथ, लेखक के द्वारा हस्ताक्षरित एक घोषणा पत्र भी भेजे, जिसमे स्पष्ट रूप से घोषणा की गई हो कि यह आलेख कही और प्रकाशित नहीं हुआ है एवं न ही अन्यत्र कहीं प्रकाशन के लिए भेजा गया है। इस संदर्भ में संस्था के ई–मेल यथा iasnewdelhi1967@gmail.com; ias_newdelhi@yahoo.co.uk पर भी ई–मेल के माध्यम से शोध–पत्र एवं घोषणा पत्र भेजे जाने चाहिए। इस ई–मेल में शोध–पत्र का शीर्षक, लेखकों के नाम एवं पते का भी उल्लेख होना चाहिए। लेख भेजने की अंतिम तिथि 30 जून है।